Regarding Naxal movement in the villages of Madhya Pradesh leading to violence and murder of police officers in fake encounters.

श्री प्रहलाद ्सिंह पटेल (बालाघाट) : माननी्य उपाध्यक्ष महोद्य, इस दे्श में ्वामपंथी उग्र्वाद, जि्से नक्सल्वाद आतंक और हिंसा की भा्ाा में कहा जाता है, उ्सकी तरफ ध्यान आकर्ति करना चाहता हूं। ्बहुत ्सारे माननी्य ्सद्स्यों ने पू्र्व में ्भी इस वि्ाय को उठा्या है, मैंने ्भी उठा्या है।

जिन प्रान्तों में नक्सल्वादी हिंसा अलग-अलग ढंग ्से चल रही है, उनमें मध्य प्रदे्श में एक नई परि्स्थिति का जन्म हुआ है। पिछले एक माह के ्भीतर नक्सल्वादि्यों ने छद्म ्युद्ध प्रारम्भ कि्या है। आज ्से एक माह पू्र्व ब्स्तर में इसी प्रकार 25 पुलि्सकर्मि्यों की, एक एडी्शनल एस.पी. के ्साथ हत्या हुई है। अ्भी 21 तारीख को दिन में ्साढ़े 11 ्बजे ्बालाघाट जिले में, जि्स ्संसदी्य क्षेत्र ्से मैं आता हूं, ्वहां पर नक्सल्वादि्यों ने 20 और 21 तारीख की दरम्यानी रात को इस अपेक्षा के ्साथ एक नकली डकैती डाली कि पुलि्स ्वहां पर आ्येगी और उ्सको ्वहां पर वि्स्फोट के ्साथ उड़ा्या जा्येगा। इस नी्यत के ्साथ इस कार्र्वाई को अंजाम दि्या। ्वहां पुलि्स मोटर्साइकिलों ्से गई, लौट कर उनको ्भी दिन में ्साढ़े 11 ्बजे मार दि्या ग्या। मेरा जो वि्ाय है, ्वह वि्ाय ्यह है कि ज्ब नक्सल्वाद ने छद्म ्युद्ध प्रारम्भ कि्या है, जो हिन्दु्स्तान में एक नई तकनीक है, उ्सने अनेक जटिल ्सम्स्याएं पैदा की हैं। उन ग्रामीण अंचलों में, जहां पुलि्स फो्र्स नहीं पहुंचती है, जहां ्सरकार पहुंच ्से ्बाहर है, जहां पर कि्सी ्भी प्रकार का कम्युनिके्शन नहीं है। अगर ्वहां कोई डकैती डालता है ्या कोई अन्य परि्स्थिति पैदा होती है तो उ्समें कोई ्भी ्सरकार राहत नहीं दे ्सकती। मेरा एक नि्वेदन है, मैं तीन दिन ्से कह रहा हूं, ्यह वि्ाय ऐसा नहीं है कि हम छप्वाने के लिए कह रहे हैं।

उपाध्यक्ष महोद्य : ्भारत ्सरकार को क्या करना चाहिए, ्वह कहि्ये न।

श्री प्रहलाद ्सिंह पटेल : मेरा नि्वेदन तो ्सुनि्ये। पांच दिन हो जाने के ्बाद प्रदे्श ्सरकार के कि्सी मंत्री ने ्या कि्सी जनप्रतिनिधि ने उन पुलि्सकर्मि्यों के प्रति ्संवेदना ्भी प्रकट नहीं की है। मेरा ्यह कहना है कि जनप्रतिनिधि अगर इतना नैतिक ्साह्ब नहीं जुटाएंगे तो कै्से काम चलेगा। इस ्सम्स्या की गम्भीरता को आप ्समझ ्सकते हैं। ्सदन ्से मैं अपेक्षा करता हूंâ€¦(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोद्य : आज तो गृह मंत्रालय का डि्स्क्शन है, आप उ्समें ्भाग लीजिए तो ्बेहतर होगा। मेरे ख्याल ्से उ्समें उठा लीजिए तो ्बेहतर है।

श्री प्रहलाद ्सिंह पटेल : मुझे ्समझ में नहीं आता कि गम्भीरता की ्बात करने हम कहां जा्यें। ज्ब ्बह्स होगी, त्ब तो अलग ्बात है, ्यह तात्कालिक परि्स्थिति है।

उपाध्यक्ष महोद्य : आज ही इस पर डि्स्क्शन हो रहा है। आज दोपहर को दो ्बजे मेरे ख्याल ्से आप उठा लीजिए।

श्री प्रहलाद ्सिंह पटेल : मेरा नि्वेदन है कि ्सरकार इस ्बारे में कुछ कहे कि कहीं कुछ होगा?

उपाध्यक्ष महोद्य : मैं ्सरकार को कम्पैल नहीं कर ्सकता, मैं ्बोल रहा हूं।

श्री प्रहलाद ्सिंह पटेल : उपाध्यक्ष महोद्य, मैं उन ्सां्सदों में ्से हूं जिन्होंने केन्द्र ्सरकार के गृह मंत्रालय को पू्र्व में ्भी पत्र लिखा है कि ज्ब प्रदे्श ्सरकार की ऐसी ्बैठकें ्बुलाई जाती हैं, जि्समें मुख्य ्सचि्व और पुलि्स के प्रमुखों को ्बुला्या जाता है तो उ्समें कम ्से कम ्संसद ्सद्स्यों को ्बुलाना चाहिए। इ्समें कहने ्से काम नहीं चलेगा।